

प्रारंभिक परीक्षा

सरकारी बांड पर विथहोलिडिंग टैक्स

संदर्भ

भारत सरकार और आरबीआई विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए सरकारी बांड पर विथहोलिडिंग टैक्स को कम करने या हटाने पर विचार कर रहे हैं।

विथहोलिडिंग टैक्स के बारे में

- **अर्थ:** विथहोलिडिंग टैक्स एक स्रोत पर काटा गया कर (टीडीएस) है जो अनिवासियों द्वारा भारत में निवेश से अर्जित आय पर लगता है।
- **इसे कौन लगाता है:** विदेशी निवेशकों को किए गए भुगतान पर आयकर प्रावधानों के तहत भारत सरकार द्वारा लगाया जाता है।
- **किस पर लागू:** विदेशी निवेशकों द्वारा भारतीय सरकारी बांड रखने से अर्जित ब्याज आय पर।
- **वर्तमान दर:** अनिवासी वर्तमान में लगभग 20% विथहोलिडिंग टैक्स का भुगतान करते हैं, जो विश्व स्तर पर सबसे अधिक है।
- **पूर्व की छूट:** भारत ने 5% की रियायती विथहोलिडिंग कर दर अपनाई थी, जो 2023 तक लागू रही।
 - **कारण:** भारतीय ऋण बाजारों में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) को आकर्षित करने के लिए कम दर लागू की गई थी।
- **कम दर वाले देश:** चीन प्रभावी रूप से कुछ सरकारी ऋण ब्याज को छूट देता है; वियतनाम 5% लगाता है; मलेशिया सरकारी बांड को विथहोलिडिंग टैक्स से छूट देता है।
- **विथहोलिडिंग टैक्स कम करने के निहितार्थ:** उच्च विदेशी पूंजी प्रवाह, विदेशी मुद्रा भंडार को समर्थन और कम उधारी लागत।
- **संभावित सीमा:** उच्च अमेरिकी ब्याज दरें और भू-राजनीतिक जोखिम कर कटौती के बावजूद अभी भी विदेशी प्रवाह को सीमित कर सकते हैं।
- **नीतिगत चिंता:** इसे पूरी तरह से हटाने से महत्वपूर्ण निवेश प्रवाह की गारंटी के बिना कर राजस्व कम हो सकता है।

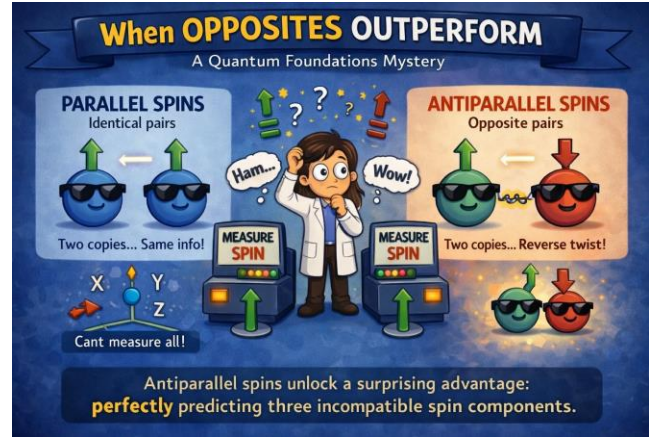
प्रतिसमानांतर क्वांटम अवस्थाएं(ANTIPARALLEL QUANTUM STATES)

संदर्भ

भारतीय शोधकर्ताओं ने खोज की है कि प्रतिसमानांतर क्यूबिट अवस्थाएं समान क्वांटम अवस्थाओं की तुलना में अधिक जानकारी प्रकट कर सकती हैं।

खोज के बारे में

- क्वांटम मापन सीमा: क्वांटम यांत्रिकी सामान्यतः निम्नलिखित दो सिद्धांतों के कारण असंगत गुणों के एक साथ सटीक मापन को प्रतिबंधित करती है:
 - हाइजेनबर्ग अनिश्चितता सिद्धांत — एक गुण का सटीक मापन दूसरे को विक्षुब्ध करता है।
 - बोहर का पूरकता सिद्धांत — कुछ गुणों को एक साथ पूर्ण रूप से नहीं जाना जा सकता है।



- अध्ययन दर्शाता है कि क्यूबिट्स की चतुर तैयारी इन सीमाओं को आंशिक रूप से दूर कर सकती है, जिससे अधिक समृद्ध क्वांटम मापन संभव होता है।
- कार्यप्रणाली:
 - क्यूबिट्स में स्पिन (spin) नामक एक गुण होता है, जो विभिन्न दिशाओं को इंगित कर सकता है।
 - कुछ स्पिन मापन असंगत होते हैं: एक को सटीकता से जानने पर दूसरे को जानने में बाधा उत्पन्न होती है।
 - दो क्यूबिट्स को प्रतिसमानांतर व्यवस्था में तैयार करके, शोधकर्ताओं ने ऐसी मापन रणनीतियां खोजीं जो उस युग्म के लिए तीन ऐसे असंगत स्पिन घटकों को प्रभावी ढंग से संगत बनाती हैं — जिससे अधिक समृद्ध संयुक्त मापन संभव हो पाता है।
- निहितार्थ
 - उपकरण लक्षण वर्णन: कम संसाधनों का उपयोग करके अज्ञात क्वांटम उपकरणों की जांच करने के बेहतर तरीके, जिससे परीक्षण और अंशांकन (calibration) में तेजी आती है।
 - क्वांटम क्रिप्टोग्राफी: क्यूबिट्स से जानकारी निकालने या छिपाने पर निर्भर प्रोटोकॉल को बेहतर प्रदर्शन या सुरक्षा के लिए प्रतिसमानांतर युग्मों का उपयोग करने हेतु पुनः डिज़ाइन किया जा सकता है।

कॉमन क्राइटेरिया डेवलपमेंट बोर्ड(CCDB)

संदर्भ

भारत ने टोक्यो में CCRA बैठक के दौरान 2026-2028 के कार्यकाल के लिए कॉमन क्राइटेरिया डेवलपमेंट बोर्ड (CCDB) की अध्यक्षता ग्रहण की।

CCDB के बारे में

- **प्रकृति:** CCDB, कॉमन क्राइटेरिया रिकग्निशन अरेंजमेंट (CCRA) के तहत तकनीकी मानक निकाय है, जो विश्व स्तर पर आईटी सुरक्षा प्रमाणपत्रों की पारस्परिक मान्यता को सक्षम बनाता है।
- **मुख्य उद्देश्य:** सुरक्षित आईटी उत्पादों और प्रणालियों के मूल्यांकन और प्रमाणन के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक विकसित करना और उनका प्रबंधन करना।
- **वैश्विक मान्यता तंत्र:** सदस्य देशों द्वारा जारी आईटी सुरक्षा प्रमाणपत्रों को CCRA ढांचे के तहत पुनः प्रमाणन के बिना पारस्परिक रूप से मान्यता दी जाती है।
- **सदस्यता:** CCRA में 20 प्रमाणपत्र-प्राधिकृत करने वाले राष्ट्र (certificate-authorising nations) और 18 प्रमाणपत्र-उपभोग करने वाले राष्ट्र (certificate-consuming nations) शामिल हैं।
- **भारत की भूमिका:** भारत 2013 में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) और STQC निदेशालय के माध्यम से एक प्रमाणपत्र-प्राधिकृत राष्ट्र के रूप में CCRA में शामिल हुआ।
- **भारत की अध्यक्षता का महत्व:** यह वैश्विक साइबर सुरक्षा मानकों, विश्वसनीय डिजिटल बुनियादी ढांचे और उभरती प्रौद्योगिकी सुरक्षा रूपरेखाओं को आकार देने में भारत की भूमिका को सुदृढ़ करता है।

समाचार में स्थान: सोलोमन द्वीप

संदर्भ

थिरमियाह मानेले (Jeremiah Manele) के नेतृत्व वाली चीन समर्थक सरकार के पतन के बाद मैथ्यू वेले (Matthew Wale) को सोलोमन द्वीप का प्रधानमंत्री चुना गया।

सोलोमन द्वीप समूह के बारे में

- **अवस्थिति:** दक्षिण-पश्चिमी प्रशांत महासागर में एक द्वीप राष्ट्र, जो पापुआ न्यू गिनी के पूर्व और ऑस्ट्रेलिया के उत्तर-पूर्व में स्थित है।
- **क्षेत्र:** ओशिनिया (Oceania) में द्वीपों के मेलानेशियाई (Melanesian) समूह का हिस्सा।
- **राजधानी:** होनियारा (Honiara), जो ग्वाडलकैनल (Guadalcanal) द्वीप पर स्थित है।



- **पड़ोसी सागर/महासागर:** प्रशांत महासागर में स्थित; सोलोमन सागर और कोरल सागर से घिरा हुआ।
- **प्रमुख द्वीप:** ग्वाडलकैनल, मलाइता, चोइसेउल, न्यू जॉर्जिया और सांता इसाबेल।
- **भू-राजनीतिक बदलाव:** 2019 में राजनयिक मान्यता को ताइवान से चीन में स्थानांतरित कर दिया।
 - **चीन-सोलोमन सुरक्षा समझौता (2022):** यह समझौता चीन को द्वीपों में पुलिस और सैन्य कर्मियों को तैनात करने की अनुमति देता है। पश्चिमी देशों को आशंका है कि यह समझौता प्रशांत क्षेत्र में एक स्थायी चीनी रणनीतिक उपस्थिति को सक्षम कर सकता है।

कंट्री स्ट्रेटेजिक अपॉर्च्युनिटीज प्रोग्राम (COSOP)

संदर्भ

भारत सरकार और अंतर्राष्ट्रीय कृषि विकास कोष (IFAD) ने 2026-2033 की अवधि के लिए एक नया आठ वर्षीय कंट्री स्ट्रेटेजिक अपॉर्च्युनिटीज प्रोग्राम (COSOP) लॉन्च किया।

COSOP के बारे में

- **COSOP एक रणनीतिक निवेश और विकास ढांचा है जो मेजबान देश और IFAD के बीच दीर्घकालिक साझेदारी को परिभाषित करता है। यह ग्रामीण आजीविका को आधुनिक बनाने के लिए एक परिचालन खाका (operational blueprint) के रूप में कार्य करता है, जो साधारण गरीबी उन्मूलन से आगे बढ़कर बाजार-उन्मुख, जलवायु-अनुकूल ग्रामीण प्रणालियों के निर्माण की दिशा में अग्रसर है।**
- **शामिल संगठन:** अंतर्राष्ट्रीय कृषि विकास कोष (IFAD)।
- **अवधि:** इस कार्यक्रम की अवधि आठ वर्ष है, जो 2026 से 2033 तक विस्तृत है।

प्रमुख विशेषताएँ

- **रणनीतिक प्राथमिकताएँ:**
 - **लचीलापन निर्माण (Resilience Building):** कमजोर ग्रामीण समुदायों के सामाजिक, आर्थिक और जलवायु लचीलेपन को बढ़ाना।
 - **ज्ञान का विस्तार (Knowledge Scaling):** सफल भारतीय विकास मॉडल को विश्व स्तर पर दोहराने के लिए ज्ञान प्रणालियों को सुदृढ़ करना।
- **संस्थागत सुदृढ़ीकरण:** स्वयं सहायता समूहों (SHGs), किसान उत्पादक संगठनों (FPOs) और सहकारी समितियों सहित जमीनी स्तर के संगठनों को सशक्त बनाने पर ध्यान केंद्रित करता है।

- **बाजार-उन्मुख आजीविका:** मूल्यवर्धन, बुनियादी ढांचा समर्थन और ई-कॉमर्स एकीकरण के माध्यम से ग्रामीण उद्यमों का मूल्य श्रृंखलाओं (value chains) में एकीकरण।
- **वित्तीय समावेशन:** विशेष रूप से महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों के लिए बड़े पैमाने पर वित्तीय सशक्तिकरण हेतु SHGs का लाभ उठाना।
- **दक्षिण-दक्षिण सहयोग:** अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशिया और लैटिन अमेरिका के देशों के साथ डिजिटल कृषि सेवाओं और समावेशी वित्त में विशेषज्ञता साझा करने के लिए भारत को एक वैश्विक ज्ञान नेता के रूप में स्थापित करना।
- **कृषि-संबद्ध क्षेत्रों में नवाचार:** कृषि, मत्स्य पालन और पशुपालन में नए युग के नवाचारों का समर्थन करने के लिए नाबार्ड (NABARD) के साथ साझेदारी।

LEADS 2025 रिपोर्ट

संदर्भ

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री ने नई दिल्ली में LEAPS अवार्ड्स 2025 के विजेताओं को सम्मानित किया और रसद दक्षता, नवाचार और आपूर्ति श्रृंखला प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लिए LEADS 2025 रिपोर्ट जारी की।

यह क्या है?

- **LEADS (लॉजिस्टिक्स ईज अक्रॉस डिफरेंट स्टेट्स)** भारत के लॉजिस्टिक्स क्षेत्र के लिए प्रमुख वार्षिक मूल्यांकन और बेंचमार्किंग टूल है। यह बुनियादी ढांचे, सेवाओं और विनियामक वातावरण जैसे विभिन्न मापदंडों पर प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश (UT) के लॉजिस्टिक्स पारिस्थितिकी तंत्र का मूल्यांकन करता है।
- **प्रकाशक:** उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय।

2025 रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं

- **कार्यप्रणाली का विकास:** LEADS 2025 (7वां संस्करण) में एक अधिक कठोर कार्यप्रणाली शामिल है, जो विभिन्न लॉजिस्टिक्स पारिस्थितिकी तंत्रों की परिपक्वता को बेहतर ढंग से दर्शाने के लिए 3-स्तरीय से नए 4-स्तरीय प्रदर्शन ढांचे (performance framework) की ओर बढ़ रही है।
- **वस्तुनिष्ठ संकेतकों पर जोर:** मजबूती सुनिश्चित करने के लिए, अब विशुद्ध रूप से धारणा-आधारित डेटा के बजाय मापने योग्य, वस्तुनिष्ठ संकेतकों को लगभग 59% वेटेज (weightage) दिया गया है।
- **राष्ट्रीय नीतियों के साथ संरेखण:** यह रिपोर्ट पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान और राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति (NLP) के साथ मजबूती से एकीकृत है।

- **मूल्यांकन के मापदंड:** राज्यों का मूल्यांकन नीति और संस्थागत ढांचे, बुनियादी ढांचे की गुणवत्ता (सड़क, रेल, गोदाम), सेवाओं की विश्वसनीयता और परिचालन वातावरण (सुरक्षा, प्रवेश में आसानी) के आधार पर किया जाता है।

राष्ट्रीय जूट बोर्ड (NJB)

संदर्भ

राष्ट्रीय जूट बोर्ड ने फसल की निगरानी को आधुनिक बनाने के लिए इसरो (ISRO) के साथ विकसित एक प्रौद्योगिकी-संचालित मंच, जूट फसल सूचना प्रणाली (JCIS) के कार्यान्वयन का विस्तार किया है।

राष्ट्रीय जूट बोर्ड के बारे में

- राष्ट्रीय जूट बोर्ड, भारत सरकार के कपड़ा मंत्रालय के अधीन एक सर्वोच्च निकाय है, जो जूट क्षेत्र के समग्र विकास के लिए उत्तरदायी है।
- **स्थापना:** यह बोर्ड राष्ट्रीय जूट बोर्ड अधिनियम, 2008 द्वारा शासित होता है, और इसे औपचारिक रूप से 12 फरवरी, 2009 को अधिनियमित किया गया था।

महत्वपूर्ण कार्य

- **अनुसंधान और विकास (R&D):** जूट फाइबर के विविध और नवीन अनुप्रयोगों का पता लगाने के लिए R&D में संलग्न होना।
- **मशीनरी सहायता:** जूट मिलों और प्रसंस्करण इकाइयों (processing units) के आधुनिकीकरण के लिए वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करना।
- **बाजार संवर्धन:** अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों और व्यापार मेलों के माध्यम से वैश्विक मंच पर भारतीय जूट का प्रदर्शन करना।
- **प्रोत्साहन योजनाएं:** जूट श्रमिकों के बच्चों को शैक्षिक प्रोत्साहन प्रदान करना और कार्यबल के भीतर स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों का समाधान करना।
- **प्रौद्योगिकी प्रसार:** किसानों और कारीगरों के लिए प्रयोगशाला-स्तर के नवाचारों और क्षेत्र-स्तर के कार्यान्वयन के बीच की खाई को पाटना।

जूट फसल सूचना प्रणाली (JCIS) के बारे में

- जूट फसल सूचना प्रणाली (JCIS) भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) और भारतीय जूट निगम (JCI) के सहयोग से विकसित एक अत्याधुनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म है।

प्रमुख विशेषताएँ

- **एकीकृत उपग्रह इमेजरी:** जिलों में जूट की खेती के स्वास्थ्य और विस्तार की निगरानी के लिए इसरो के उपग्रह डेटा और वनस्पति सूचकांकों का उपयोग करता है।

- **डिजिटल उपकरण:**
 - **BHUVAN JUMP:** भू-टैग किए गए क्षेत्र डेटा के बड़े पैमाने पर संग्रह के लिए I-CARE फील्ड नेटवर्क द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक मोबाइल एप्लिकेशन।
 - **PATSAN:** एक वेब-आधारित एनालिटिक्स प्लेटफॉर्म जो हितधारकों और सरकारी अधिकारियों के लिए निगरानी और उत्पादन मूल्यांकन प्रदान करता है।
- **स्मार्ट सैंपलिंग:** अत्यधिक सटीक उपज अनुमान सुनिश्चित करने के लिए फसल कटाई प्रयोगों (CCE) हेतु भू-स्थानिक स्मार्ट-सैंपलिंग का उपयोग करता है।
- **मौसम एनालिटिक्स:** बाढ़, सूखे और तापमान में उतार-चढ़ाव के लिए जिला-स्तरीय प्रारंभिक चेतावनी अलर्ट प्रदान करने हेतु वास्तविक समय के मौसम डेटा को एकीकृत करता है।
- **आपदा मूल्यांकन:** प्राकृतिक आपदाओं के तुरंत बाद फसल और गुणवत्ता के नुकसान का अनुमान लगाने के लिए बाढ़ प्रभाव मॉडल विकसित करने में सक्षम।
- **स्वचालित रिपोर्टिंग:** उत्पादन प्रवृत्तियों में विसंगतियों को दूर करने के लिए राज्य और राष्ट्रीय एजेंसियों के बीच संचार को सुव्यवस्थित करता है।

गैर-प्रशुल्क बाधाएं (NTBS)

संदर्भ

अपनी रिपोर्ट इनविजिबल बैरियर्स: द कॉस्ट्स ऑफ नॉन-टैरिफ मेजर्स में, UNCTAD ने खुलासा किया कि गैर-प्रशुल्क उपाय (NTMs) अब 88% देशों के लिए पारंपरिक प्रशुल्कों की तुलना में उच्च व्यापार लागत आरोपित करते हैं।

परिभाषा

- **गैर-प्रशुल्क बाधाएं (NTBs)** सामान्य सीमा शुल्क (customs tariffs) के अलावा अन्य नीतिगत उपाय हैं जिनका माल के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर संभावित आर्थिक प्रभाव पड़ सकता है।
- जबकि प्रशुल्क (tariffs) आयात पर साधारण कर हैं, NTB अधिक जटिल अदृश्य बाधाएं हैं—जैसे नियम, मानक, या कोटा—जो व्यापार की गई मात्रा या वस्तुओं की कीमतों को बदल देते हैं।

गैर-प्रशुल्क उपायों के प्रकार

तकनीकी उपाय

- **स्वच्छता और पादप स्वच्छता (SPS) उपाय:** मानव, पशु, या पौधे के जीवन को कीटों, बीमारियों, या विषाक्त पदार्थों से बचाने के नियम (जैसे, फलों में कीटनाशकों की सीमा)।

- **व्यापार के लिए तकनीकी बाधाएं (TBT):** उत्पाद के आकार, वजन, पैकेजिंग और लेबलिंग पर नियम (जैसे, इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए ऊर्जा दक्षता रेटिंग)।

गैर-तकनीकी उपाय

- **मात्रात्मक प्रतिबंध:** कोटा (मात्रा पर सीमा) या कुछ उत्पादों पर पूर्ण प्रतिबंध।
- **आयात लाइसेंसिंग:** आयात करने से पहले विशेष परमिट प्राप्त करने की आवश्यकताएं।
- **मूल्य नियंत्रण उपाय:** घरेलू कीमतों का समर्थन करने के उपाय, जैसे एंटी-डंपिंग शुल्क या प्रशासनिक शुल्क।
- **उत्पत्ति के नियम (Rules of Origin):** व्यापार की कम दरों के लिए अर्हता प्राप्त करने का निर्णय लेने हेतु यह निर्धारित करने वाले कानून कि उत्पाद कहाँ बनाया गया था।

यह कैसे काम करता है?

- **NTB अनुपालन बाधाओं के रूप में कार्य करते हैं।** विदेशी बाजार में प्रवेश करने के लिए, एक निर्यातक को यह साबित करना होगा कि उनका उत्पाद गंतव्य देश की विशिष्ट कानूनी आवश्यकताओं को पूरा करता है। इसमें अक्सर शामिल होते हैं:
- **परीक्षण और प्रमाणन:** सुरक्षा जांच के लिए उत्पादों को मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं में भेजना।
- **विशेष पैकेजिंग:** स्थानीय भाषा या सुरक्षा कानूनों को पूरा करने के लिए भौतिक उत्पाद या उसके कंटेनर को अनुकूलित करना।
- **निरीक्षण:** विदेशी अधिकारियों को घरेलू कारखानों या खेतों का ऑडिट करने की अनुमति देना।

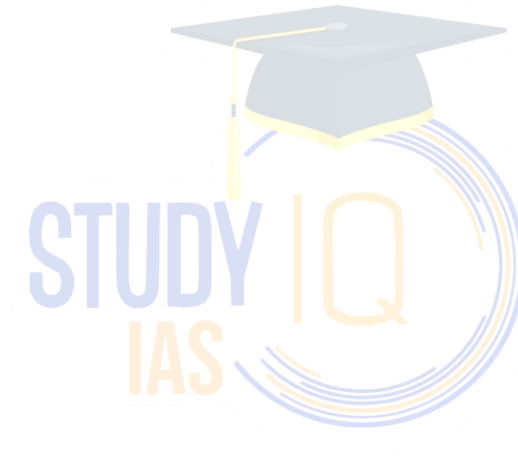
प्रमुख विशेषताएँ

- **अदृश्य प्रकृति:** 10% प्रशुल्क के विपरीत, जो स्पष्ट और निश्चित है, NTB अक्सर मोटी विनियामक पुस्तकों (regulatory books) में छिपे होते हैं, जिससे छोटी फर्मों के लिए उनकी पहचान करना मुश्किल हो जाता है।
- **दोहरा उद्देश्य:** कई NTB वैध लक्ष्यों (जैसे, भोजन सुरक्षित है यह सुनिश्चित करना) की पूर्ति करते हैं, लेकिन उनका उपयोग विदेशी प्रतिस्पर्धियों को बाहर रखने के लिए प्रच्छन्न संरक्षणवाद (disguised protectionism) के रूप में भी किया जा सकता है।
- **भू-राजनीतिक उपकरण:** सरकारें तेजी से NTM का उपयोग रणनीतिक क्षेत्रों, जैसे हरित प्रौद्योगिकियों या महत्वपूर्ण खनिजों को सुरक्षित करने के लिए करती हैं।

विश्व व्यापार संगठन (WTO) और गैर-प्रशुल्क बाधाएं

- विश्व व्यापार संगठन (WTO) NTB पर प्रतिबंध नहीं लगाता है, लेकिन यह सुनिश्चित करना चाहता है कि उनका उपयोग अनुचित व्यापार बाधाओं के रूप में न किया जाए।

- **SPS और TBT समझौते:** ये WTO समझौते अनिवार्य करते हैं कि नियम वैज्ञानिक साक्ष्य पर आधारित होने चाहिए और विदेशी उत्पादों के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए।
- **पारदर्शिता जनादेश (Transparency Mandate):** सदस्य देशों को किसी भी नए व्यापार नियम के बारे में WTO को सूचित करना आवश्यक है ताकि अन्य देशों को अनुकूलन करने या आपत्ति जताने का समय मिल सके।
- **विशिष्ट व्यापार चिंताएं (STCs):** एक तंत्र जहां देश औपचारिक रूप से किसी पड़ोसी के विनियमन को चुनौती दे सकते हैं यदि वे मानते हैं कि यह अनुचित रूप से उनके निर्यात को प्रतिबंधित करता है।
- **तकनीकी सहायता:** WTO और UNCTAD विकासशील देशों को वैश्विक मानकों को पूरा करने के लिए आवश्यक प्रयोगशालाओं और प्रमाणन निकायों के निर्माण में मदद करने के लिए काम करते हैं।



मुख्य परीक्षा

भारत में एआई-संचालित वित्तीय समावेशन

संदर्भ

डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे (DPI) और उन्नत एनालिटिक्स (advanced analytics) के अभिसरण द्वारा संचालित, एआई-संचालित वित्तीय समावेशन की दिशा में भारत की परिवर्तनकारी यात्रा।

वित्तीय समावेशन क्या है?

वित्तीय समावेशन यह सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है कि व्यक्तियों और व्यवसायों, विशेष रूप से संवेदनशील और निम्न-आय वाले समूहों की उपयोगी और वहनीय वित्तीय उत्पादों और सेवाओं तक पहुंच हो।

भारत में वित्तीय समावेशन पर फैक्टशीट

- **पहचान का आधार (Identity Foundation):** मार्च 2026 तक, 144 करोड़ से अधिक आधार नंबर जनरेट किए गए हैं, जो प्रमाणीकरण के लिए एक सुरक्षित बायोमेट्रिक पहचान प्रदान करते हैं।
- **बैंकिंग पहुंच (Banking Reach):** जन धन खाते बढ़कर 58.16 करोड़ (अप्रैल 2026 तक) हो गए हैं, जिनमें कुल संचयी जमा राशि ₹3.02 लाख करोड़ है।
- **भुगतान का वेग (Payment Velocity):** अकेले मार्च 2026 में, UPI ने लगभग ₹29.53 लाख करोड़ के लेनदेन को संसाधित किया, जो भारत की खुदरा भुगतान मात्रा का 81% है।
- **ऋण क्षमता (Credit Potential):** एआई-संचालित मॉडल में कम सेवा वाले सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) के लिए आर्थिक मूल्य में 130-170 बिलियन अमेरिकी डॉलर के ऋण अंतराल (credit gap) को अनलॉक करने की क्षमता है।

वित्तीय समावेशन को बढ़ाने में एआई का उदय

- **वैकल्पिक क्रेडिट स्कोरिंग (Alternative Credit Scoring):** एआई बिना सिबिल (CIBIL) स्कोर वाले लोगों को ऋण प्रदान करने के लिए केवल पारंपरिक इतिहास के बजाय डिजिटल फुटप्रिंट का विश्लेषण करता है।
- **भाषा की बाधा को दूर करना:** एआई मॉडल नागरिकों को उनकी मातृभाषा में जटिल वित्तीय प्रणालियों के साथ बातचीत करने में सक्षम बनाते हैं।

- **धोखाधड़ी का पता लगाना और सुरक्षा:** रीयल-टाइम एआई निगरानी पहली बार डिजिटल उपयोगकर्ताओं को साइबर अपराध से बचाने के लिए संदिग्ध पैटर्न की पहचान करती है।
- **अति-वैयक्तिकृत समाधान (Hyper-Personalized Solutions):** एआई वित्तीय संस्थानों को अनौपचारिक श्रमिकों के नकदी-प्रवाह (cash-flow) पैटर्न के अनुरूप विशेष रूप से तैयार किए गए उत्पादों को डिजाइन करने में मदद करता है।
- **परिचालन दक्षता (Operational Efficiency):** एआई के माध्यम से दस्तावेजीकरण और केवाईसी (KYC) प्रक्रियाओं के स्वचालन से सेवा वितरण की लागत और समय कम हो जाता है।

वित्त में एआई से जुड़ी चुनौतियाँ

- **एल्गोरिदमिक पूर्वाग्रह (Algorithmic Bias):** यदि प्रशिक्षण डेटा त्रुटिपूर्ण है, तो एआई अनजाने में कुछ जनसांख्यिकी या क्षेत्रों के साथ भेदभाव कर सकता है।
- **डेटा गोपनीयता संबंधी चिंताएं:** सहमति-आधारित साझाकरण (consent-based sharing) की ओर बदलाव के लिए संवेदनशील व्यक्तिगत जानकारी के दुरुपयोग को रोकने हेतु मजबूत सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है।
- **डिजिटल साक्षरता अंतराल:** हालांकि एआई इंटरफ़ेस को सरल बनाता है, फिर भी कई उपयोगकर्ता अंतर्निहित डिजिटल अवधारणाओं के साथ संघर्ष करते हैं, जिससे वे सोशल इंजीनियरिंग के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं।
- **साइबर सुरक्षा का विकास:** जैसे-जैसे रक्षा के लिए एआई उपकरणों में सुधार होता है, वैसे-वैसे वित्तीय क्षेत्र को लक्षित करने वाले एआई-संचालित डीपफेक (deepfake) और फ़िशिंग (phishing) हमलों में भी वृद्धि होती है।
- **तकनीकी विभाजन (Technological Divide):** उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाली एआई सेवाओं के लिए 5G और आधुनिक स्मार्टफोन की आवश्यकता होती है, जो अभी भी आर्थिक पिरामिड के सबसे निचले स्तर के लिए पहुंच से बाहर हो सकते हैं।

आगे की राह

- **बैंकिंग भाषिणी (Banking BHASHINI) को सुदृढ़ करना:** यह सुनिश्चित करने के लिए कि अगले आधा बिलियन उपयोगकर्ता टाइप करने या पढ़ने की आवश्यकता के बिना बैंकिंग कर सकें, वॉयस-फर्स्ट एआई इंटरफ़ेस का विस्तार करना।
- **ULI की पहुंच का विस्तार:** ग्रामीण ऋण व्यवस्था को मजबूत करने के लिए अधिक क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (RRBs) और सहकारी बैंकों को यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफ़ेस (ULI) में एकीकृत करना।
- **नैतिक एआई रूपरेखा (Ethical AI Frameworks):** यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्रेडिट निर्णय पारदर्शी और पूर्वाग्रह से मुक्त हों, वित्त में व्याख्यात्मक एआई (Explainable AI) के लिए राष्ट्रीय मानक विकसित करना।
- **फिनटेक-बैंक सहयोग को प्रोत्साहित करना:** पारंपरिक बैंकों (legacy banks) को चुस्त, एआई-फर्स्ट स्टार्टअप्स के जोखिम-मूल्यांकन मॉडल को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु रेगुलेटरी सैंडबॉक्स (Regulatory Sandbox) का उपयोग करना।

- **सतत डिजिटल शिक्षा:** एआई-नेतृत्व वाले वित्तीय साक्षरता अभियान शुरू करना जो नए उपयोगकर्ताओं को साइबर सुरक्षा सिखाने के लिए गेमीफाइड लर्निंग (gamified learning) का उपयोग करते हैं।

